विद्रोही कवि निराला और नजरूल

डॉ० कृषि कुमार[३०]

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला और काजी नजरूल इस्लाम एक ही युग के उपज थे। निराला का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में स्थित महिषादल नामक स्थान में जनवरी १८९६ ई० में हुआ था। इनके पिता रामसहाय त्रिपाठी महिषादल के देशी रियासत में सिपाही थे। मात्र तीन वर्ष की आयु में निराला मातृहीन हो गये थे। तत्पश्चात उनके पिताजी के देख–रेख में बड़े हुए, परन्तु पिता के कठोर व्यवहार ने बालक निराला को जिद्दी और विद्रोही बना दिया। वहीं दूसरी ओर बंगाल के ही वर्द्धमान जिले के चुरूलिया नामक स्थान में २४ मई १८९९ ई० में जन्में नजरूल इस्लाम का जीवन भी बड़ा कष्टदायी रहा। इनके पिता के दो बीवियों से सात पुत्र और दो पुत्रियां थी। इनमें से कई भाई बहन के मृत्यु के बाद जन्में नजरूल के पिता इन्हें 'दुखुमिया' के नाम से पुकारते थे। पिता का दिया हुआ नाम मानों सार्थक हुआ। क्योंकि इनके पिता की मृत्यु जब ये आठ वर्ष के थे तभी १९०८ ई० में हो गयी। फिर क्या था, मानों इनके उपर दुखों का पहाड़ टुट पड़ा। जिससे ये समाज के भीतर और बाहर दोनों तरह के समस्याों को करिब से देख पाये। इन समस्याओं को बड़ी बेबाकी से देखा और झेला। इन परिस्थितियों में ये भी तपते गये जिससे इनके जीवन में बेबाकीपन एवं विद्रोह की भावना बढ़ती गयी।

जहाँ नजरूल का बचपन कष्ट दायी रहा वहीं निराला का यौवन अधिक कष्टमय था, क्योंकि निराला जी की १३ वर्ष के उम्र में मनोरमा देवी से विवाह हो गया। पर इनका वैवाहिक जीवन अधिक दिनों तक सुखमय न रहा। मनोरमा देवी का निधन १९१९ ई० में अर्थात विवाह के दस वर्ष के उपरान्त ही हो गया। इस प्रकार दोनों कवि चाहे निराला हो या नजरूल आजीवन संघर्ष करते रहे।

हिन्दी के निराला तथा बांग्ला के नजरूल साहित्य जगत में विद्रोही कवियों के रूप में जाने–पहचाने जाते हैं। दोनों ने देशवासियों को जागृत करने तथा शोषण, कुचक्रों से देश की जनता को सजग रहने का आह्वान किया है। निराला और नजरूल को विद्रोही कवि कहा जाता है। प्रश्न उठता है कि उनका विद्रोह किसके प्रति ओर क्यों था? तो यह विद्रोह मुख्यतः साम्राज्यवाद के विरूद्ध था। साम्राज्य के शिकंजे से युक्त एवं स्वाधीन सार्वभौम राष्ट्र का सपना निराला और नजरूल ने अपने–अपने ढंग से अपने–अपने काव्यों के माध्यम से दिखाया है।

निराला और नजरूल जन्में तो बंगाल में ही थे, पर एक ने हिन्दी साहित्य में जनक्रान्ति और विद्रोह को अपने काव्यों में स्थान दिया तो दूसरे ने बांग्ला साहित्य में विद्रोह एवं क्रान्ति की बात की है। भारतवर्ष के दशा को देखकर निराला अत्यन्त दुखी रहते है। वे सुधा में १९२९ में लिखते है कि– ''भारतवर्ष ने जितना सहना था, सह लिया। वह समय निकल गया, जब खिलौना पा कर भारत बहल जाता था। देश समझ गया है कि हाथ पर हाथ

---

[30] पंचकोट महाविद्यालय, सखड़ी, पुरूलिया, पं० बंगाल, मोबाईल – ९२३२३१९७३५

धर कर बैठने से काम नहीं चलेगा। भारत में एक नई लहर पैदा हो गई है। नवयुवकों ने रण-भेरी बजा दी है।'' भारतवासियों को अतीत का स्मरण करते हुए कहते है कि शिवाजी और गुरू गोविंद सिंह जैसे वीर इसी देश के पुत्र थे। अतः एक बार पुनः देशवासियों को जागृत करते हुए कहते हैं कि-

''शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार'' (जागो फिर एक बार)

नजरूल भारत की दशा को देखकर दुखी होते है और सोचते है कि हम स्वराज-ट्वराज नहीं समझते, क्योंकि एक-एक महारथी एक-एक ढंग से इस शब्द का अर्थ करते हैं। भारतवर्ष का एक परमाणु अंश भी विदेशी शासन के अधीन नहीं रहेगा। भारतवर्ष का सम्पूर्ण दायित्व, स्वाधीनता की रक्षा का सम्पूर्ण भार, शासनभार सब कुछ भारतीयों के पास होगा। किसी भी विदेश को उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं होगा, उन्हें सब कुछ छोड़ना होगा। वे प्रार्थना या आवेदन पर कर्णपात नहीं करेंगे। पूर्ण स्वाधीनता पाने के लिए हमें सबसे पहले विद्रोह करना होगा। समस्त नियम कानून, बंधन शृंखलाओं, रूढ़ियों-को तोड़ना होगा और कहते हैं कि-

''आमि दुर्वार
आमि भेंगे कोरि सब चुरमार,
आमि अनियम उच्छृखल
आमि ढले जाई जतो बन्धोन
जतो नियम-कानून शृंखला।'' (विद्रोही)

वे कहते है मैं दुर्वार हूँ मुझे कोई रोक नहीं सकता। मैं सब को तोड़-मरोड़कर रख दूँगा। जितने भी बन्धन, नियम कानून तथा शृंखला पैरो तले रौंद कर आगे बढ़ते रहूँगा।

निराला अपनी 'मुक्ति' कविता के माध्यम से मुक्त होने की बात कहते हैं-

''तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा
पत्थर की, निकलो फिर,
गड़्गा - जल - धारा!'' (मुक्ति)

नजरूल वही सम्पूर्ण भारतवर्ष के लोगों से 'अपनी वाणी' नामक कविता में विद्रोह करने के लिए ललकार कर कहते हैं कि-

''विपलो आनि विद्रोही कोरि
नेचे-नेचे गोंफे दीई ताव
आमि धृष्ट
आमि दांत दिया क्षिणी विश्वमायेर आंचल।'' (अपनी वाणी)

अर्थात कह रहे हैं कि मैं क्रांति करूँगा। मैं विद्रोह करूँगा। मैं नाच-नाच मूँछों पर ताव देता हूँ । मैं ढीठ हूँ। मैं दातों से विश्वमाता के आंचल को फाड़ डालूँगा। अतः मैं विश्व के

तापों से उदासीन विधाता को चुनौती देते हुए कहते हैं कि मैं विद्रोही भृगु हूँ। मैं ईश्वर के सीने पर अपने चरणों का चिह्न अंकित कर दूँगा। मैं संहारक हूँ, शोक, ताप आदि के प्रति एक प्रकार से उदासीन विधाता के सीने को फाड़ डालूँगा। जो भी हमारे रास्ते में आयेगा, उन सारी बाधाओं को दूर कर दूँगा।

निराला पूर्ण भारतवासियों को सतत् आगे बढ़ने का आह्वान करते हैं और वे अपनी कविता 'तुलसीदास' के माध्यम से कहते हैं कि –

''जागो, जागो, आया प्रभात,
बीती वह, बीती अन्ध रात,
झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात पूर्वाचल;
बाँधो, बँधो किरणें चेतन,
तेजस्वी हे तमजिज्जीवन;
अती भारत की ज्योतिर्धन महिमाचल।'' (तुलसीदास)

इस प्रकार वे सम्पूर्ण भारतवासियों को कहते हैं जागो एक नए उम्मिद और नये विचारों के साथ क्योंकि अब अंधेरा छट गया है।

नजरूल बंगाल में देशबन्धु चितरंजन दास द्वारा चलाये जा रहे साप्ताहिक पत्रिका 'बंगलार कथा' के लिए एक क्रांतिकारी गीत लिखा। जिससे बंगाल के साथ ही साथ सम्पूर्ण भारतवासियों में क्रांति का जनसंचार कर दिया। वे अपने आप को रोक नहीं पाते थे। उनके भीतर क्राति की भावना निम्न पक्तियों से लगायी जा सकती है–

''जेल के इस लोहे के द्वार को तोड़ दो
उसके टुकड़े–टुकड़े कर दो
पत्थरों को रक्तरंजित कर दो
स्वतंत्रता की देवी की पूजा के लिए उठो। '' (गीत)

यह गीतनुमा कविता उस समय लिखी गयी जब इस तरह की बहुत कम कविता लिखी जाती थी। जिससे क्रांतिकारियों के भीतर नया जोश और उमंग भर जाता था।

निराला जहाँ पूर्ण स्वाधीनता की मांग का समर्थन करते हैं तो वहीं नजरूल पूर्ण स्वाधीनता का दावा करते हैं। निराला साइमन कमीशन के संदर्भ में कहते हैं कि– 'भारत के भविष्य का निश्चय करने का अधिकार तो केवल हमें और हमी को है।'' वहीं नजरूल अपने 'विद्रोही वाणी' में पूर्ण स्वाधीनता पाने के लिए हमें सबसे पहले विद्रोह करना होगा। समस्त नियम कानून, बंधन–शृंखलाओं, रूढ़ियों के विरूद्ध संघर्ष करना होगा तभी देश सच्चे अर्थों में स्वाधीन होगा।

इस प्रकार दोनों एक ही देश, काल में रहते हुए जहाँ एक ने बांग्ला साहित्य को तो दूसरे ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया एवं देश, समाज के कुरीतियों से भारतवासियों को सजग एवं सावधान करते हुए उन्हें उचित मार्ग पर लाने का आजीवन प्रयास करते रहे।